रविवार, 12-03-2023 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

चलो चलो नी प्यारी चल रचना देखें, बलधारी सिंघासन सजाया ए।।

खीर समुंद्र विच टापू दे, इक जगमग मन्दिर बनाया ए।।

इन्हां मन्दिरां विच महाबीर जी साजन, लक्ष्मण चंवर झुलाया ए।।

इन्हां मन्दिरां विच रघुनाथ जी साजन, लक्ष्मण चंवर झुलाया ए।।

शिव ब्रह्मा वी जिसदा सिमरन करदे, शेष गणेश वी अन्त न पाया ए।।

देवी देवते दर्शन नूं आवन, नारद जी बीन बजाई ए।।

अनाहद वाजे दी झनकार जो आवे, महाबीर जी ने रचना रचाई ए।।

ऋषि मुनि बली जा दा अन्त न पावन, बेअन्त महाबीर रघुराई ए।।।

चरणां विच महाबीर जी साजन, सिंघासन ते साजन रघुराई ए।।

स्वर्ग विचों अप्सरां नाचन नूं आवन, मन्दिर दी शोभा लखी न जाई ए।।

देवी देवते फुल बरसावन, महाबीर जी ने रचना रचाई ए।।

चलो नी सारियां दासियां हथ जोड़ के, महाबीर जी अग्गूं सीस निवाइये।।

सजनों ऐसे ही प्रेममय वातावरण में निरन्तर बने रहना और समर्पित भाव से सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों की पालना करते हुए अपना जीवन सुगम व सरल बना लेना। इस सन्दर्भ में जानो कि शास्त्र विहित जीवन जीने हेतु, एक मानव के लिए जिस कला का सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णन है, उस कला को समझने हेतु नियमित रूप से सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का पठन, अध्ययन व

मनन अनिवार्य है। निश्चित रूप से ऐसा सुनिश्चित किए बगैर कोई भी व्यक्ति आत्मिकज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता और मानव धर्म पर स्थिर नहीं बना रह सकता। आशय यह है कि अगर अपना जीवन निष्पाप व्यतीत करते हुए अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम पाना चाहते हो तो थोड़ा अपने आप को समझाओ और फिर स्वयं में वांछित परिवर्तन लाने में देरी मत करो। यहाँ याद रखो कि जीवन की घड़ियाँ पल-पल करके व्यतीत होती जा रही हैं। ध्यान से देखो एक दिन दुनियाँ में आए, पैदा हुए और उसके बाद युवा हो गये और अब अपनी आयु को देखो कि कितने वर्ष बीत गए, क्या समय का पता चला? क्या कभी हमने इतने वर्षों में खुद की यथार्थता को जानने का यत्न किया?

'मौन'।

सजनों जब हम अपनी यथार्थता को जानने के प्रति समय लगाने में ही सकुचाते हैं और निरर्थक धारणा में सारा दिन व्यतीत कर देते हैं तो फिर हम कैसे सत्य-धर्म के मार्ग पर बने रहने के काबिल बने रह सकते हैं? यही कारण है कि आज अधिकतर मानवों का जीवन जीने का रास्ता, असत्य और अधर्म के अनुकूल है। इस अनुकूलता को देखते हुए ही शासनकर्त्ताओं ने इन्सानों को असत्य-अधर्म के मार्ग पर बने रहने की छूट दे रखी है ताकि उनका प्रभुत्व सदा बना रहे। पर यहाँ यह मत भूलो कि अज्ञानियों पर राज करना बहुत आसान होता है। अज्ञानी तो भ्रमित बुद्धि इन्सान होते हैं जिनको अपनी ही पहचान नहीं होती, ऐसे में वे जीव, ब्रह्म और जगत की यथार्थता कैसे जान सकते हैं? सो ऐसे असमर्थ इन्सानों को भटकाना आसान होता है क्योंकि वे निश्चयात्मक बुद्धि नहीं होते। अब जो निश्चयात्मक बुद्धि नहीं है, उसको सदा संकल्प-विकल्प परेशान करते रहते हैं। इसी कारण वे सदा नकारात्मक सोचों में डूबे रहते हैं और उनका समुचित समाधान नहीं कर पाते। जानो ऐसे इन्सान कुदरत का यह सत्य भूल जाते हैं कि भगवान सर्वव्यापक है। इस सन्दर्भ में जब प्रत्येक आत्मा का आधार सर्वव्यापक

परमात्मा है तो हम इस सत्य को नकार नहीं सकते कि हम सब एक हैं। मानते हो कि हम सब एक हैं?

'हाँ जी'।

तो फिर सबके साथ प्रेमयुक्त होकर प्रसन्नतापूर्वक विचरो और आत्मीयता का व्यवहार करो। ऐसा करने से प्रफुल्लता आएगी और मानसिक स्थिति शान्त व स्थिर बनी रहेगी। याद रखो जहाँ स्थिरता और शान्ति है, वहाँ ख़्याल आत्मस्वरूप में स्थित रहता है। यह होता है - सब फुरनों से आज़ाद होकर, सत्य-धर्म के अनुकूल परोपकार कमाते हुए अपने जीवन का सहज ही उद्धार कर लेना।

अब चैत्र का यज्ञ भी नज़दीक आ रहा है अतः अपने आप को स्वाभाविक बदलाव द्वारा इस काबिल बनाने का यत्न करो कि चैत्र के यज्ञ पर जो दिव्य नज़ारा प्रत्यक्ष होता है उसको देखने समझने के काबिल बन सको। इस हेतु आओ अब मिलकर बोलेंः-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

शब्दः-

सजनां नूं आप लै आवनगे आप ही अपड़ावनगे, आप करनगे यज्ञ।

सजन श्री शहनशाह हनुमान जी, सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी आप ही हो सर्वज्ञ।।

शेषां ते होसन ओ-ओ-ओ-ओ शेषां ते होसन ओ होसन विराजमान लक्ष्मी नारायण चतुर्भुजधारी।

दर्शन पावनगे ऐ-ऐ-ऐ दर्शन पावनगे सारे सजन नर नारी।

ओही ओही, आहा हा, ओही ओही, आहा हा हा।।

पीले वस्त्र गल बैजन्ती माला, सिर ते ताज कमर सजे दुशाला।

हीरे लाल रत्नां चमकनगे ऐ-ऐ-ऐ हीरे लाल रत्नां चमकनगे चमकन लीलाधारी।।

दर्शन पावनगे ऐ-ऐ-ऐ दर्शन पावनगे सारे सजन नर नारी।

ओही ओही, आहा हा, ओही ओही, आहा हा हा।।

हेठां अप्सरा नचन टपन सौहिलड़े गावन, ऊपर परियां झुरमट पावन।

मुरली बजा बजा सुदर्शन चक्र चला चला, चक्र चला रहे ने ऐ-ऐ-ऐ चला रहे खेल खिलाड़ी।

मुरली बजा रहे ने ऐ-ऐ-ऐ चक्र चला रहे ने, चला रहे खेल खिलाड़ी।।

दर्शन पावनगे ऐ-ऐ-ऐ दर्शन पावनगे सारे सजन नर नारी।

ओही ओही, आहा हा, ओही ओही, आहा हा हा।।

शिव ब्रह्मा वी डमरु बजावे, नारद जी दी वीनां तूं तूं करदी जावे।

महाराज जी दे चार चुफेरियों फेरियां लावे, तेतीस करोड़ देवता वी खुशी मनावे।।

खुशी मनावे ओ-ओ-ओ-ओ खुशी मनावे ओ विराट नगरी ओ सारी।

दर्शन पावनगे ऐ-ऐ-ऐ दर्शन पावनगे सारे सजन नर नारी।

ओही ओही, आहा हा, ओही ओही, आहा हा हा।।

महाराज जी पींघां पघूंड़े झूटन, ऊपर चलन फुव्वारे।

चंवर झुलन फुल वर्षन कैसे हो रहे ने नज़ारे।।

खुशी मनावे ओ-ओ-ओ-ओ खुशी मना रहे दयालु श्री रामचन्द्र जगत हितकारी।

दर्शन पावनगे ऐ-ऐ-ऐ दर्शन पावनगे सारे सजन नर नारी।

ओही ओही, आहा हा, ओही ओही, आहा हा हा।।

सजनों चैत्र के यज्ञ पर इस इलाही दर्शन की प्रबल अभिलाषा अपने मन में लेकर आना। आपकी यह चाहत पूरी हो, उसके लिए अभी से जो भी नाम-अक्षर है वह नीतिबद्ध चलाना आरम्भ कर देना। याद रखो नाम अक्षर के साथ जब आपका ख़्याल-ध्यान जुड़ा रहेगा, तो ही आप उस इलाही दर्शन का मन में अनुभव कर पाओगे। जानो यह हर सजन के लिए अमोलक मौका है। अतः हमारी सबसे प्रार्थना है कि इस मौके को किसी कारण भी मत खोना क्योंकि एक बार यज्ञ के दौरान आपके ख़्याल में वह इलाही दर्शन उतर गया तो आप धन्य-धन्य हो जाओगे जो अपने आप में काममुक्त होने की बात होगी। यहाँ काममुक्त होने से तात्पर्य हर कामना से आज़ादी पा, मन-वचन-कर्म द्वारा निष्काम हो जाने से है। जानो ऐसा होने पर ही हमारी सोच, हमारी बातचीत, हमारा कर्म सब निष्काम होगा। इस परिप्रेक्ष्य में सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार यह तो आप सब जानते ही हैं कि जो निष्कामी होता है वही ब्रह्मज्ञानी हो सकता है। इस महत्ता के दृष्टिगत निष्कामता को जीवन उद्धार का हेतु मानो और अभी से अपने मन को इस भाव में साधना आरम्भ कर दो। आशय यह है कि दिनचर्या के समय खुद पर पहरा रखो और सतत् आत्म-निरीक्षण रखो कि हम इस भाव पर स्थिरता से बने रहने में कितने सफल हुए हैं? याद रखो कि यदि ऐसा नहीं किया तो ख़्याल संसारी फुरनों में जकड़ा रहेगा और आपका ध्यान कहीं भी स्थित नहीं हो पाएगा। ध्यान स्थित नहीं होगा तो यथार्थ यानि सत्य, ख़्याल-ध्यान में कैसे उतरेगा? मतलब यह है कि जब तक आपका ख़्याल सत्य (जो कि परब्रह्म परमेश्वर है) में ध्यान स्थित नहीं होगा तब तक आप जीवन की वास्तविकता से परिचित नहीं हो पाओगे। नतीजा यह होगा कि आप दुनियाँ में जिसको जैसा करते देखोगे, वैसा ही

नकारात्मक करने व धारण करने के लिए लालायित हो उठोगे। इस तरह आपकी धारणा नकारात्मक हो जाएगी और आप साधना में सफल नहीं हो सकोगे क्योंकि आपको हर क्षण 'काम' सताएगा और आप दुनियाँ में बन्धनमान होते जाओगे। यहाँ याद रखो कि अपने ख़्याल को दुनिया में बन्धनमान नहीं अपितु स्वतन्त्र अवस्था में साधे रखने की आवश्यकता है। अब ऐसा करने हेतु युक्ति तो आपके पास है ही। फिर भी अगर युक्ति भूल गये हो तो उसे युक्ति वाली किताब में से दोबारा पढ़ सकते हो और अपने अन्दर वांछित बदलाव लाकर परमार्थ में आगे बढ़ सकते हो। यही सजनों आज़ादी है यानि हर फुरने से स्वतन्त्र अवस्था है। इस स्वतन्त्रता को प्राप्त करने के लिए आपको जो भी त्यागना पड़े वह त्यागने से मत सकुचाओ। आशय यह है कि इस आज़ादी में जो भी आपका नकारात्मक भाव-स्वभाव बाधक बनता है उसको छोड़ दो। ऐसा करने से आपका ख़्याल स्वच्छ हो जाएगा और जिह्वा स्वतन्त्र हो जाएगी। इस तरह आपके जीवन का काम बन जाएगा यानि जो अमोलक मानव चोला आपको मिला है आप उसका सदुपयोग कर अपने सच्चे घर परमधाम पहुँच विश्राम को पाओगे। सो ऐसा उद्यम दिखाने से मत घबराओ और इसके प्रति किसी विध् भी कमज़ोर मत पड़ो।

अब सजनों चैत्र के यज्ञ पर परिवारों सहित आना है। इस सन्दर्भ में अगर कोई

कुमार्ग पर चल भी रहा हो तो उसको सद्मार्ग पर लाने के लिए प्रयत्न करना है। जानो यही सजनता है। अपने इस कर्त्तव्य को समझदारी से निभाना। अब ध्यान से सुनो सच्चेपातशाह जी क्या कह रहे हैंः-

दिखा देसन महाबीर दिखा देसन, सारी दुनियां दा मन हिला देसन।।

घोड़े ते सवार होके गली गली ओ फिर रहे ने, जेहड़े भाई मनणकार न होसन।

उन्हां नूं बली समझा देसन, दिखा देसन महाबीर दिखा देसन।।

पाप पुण्य जो करे सब दा बली जी देख रहे।

जेहड़ी भैण मनणकार न होसी, उसनूं गदा दा बल दिखा देसन।।

हुण भाईयो तुसी मन जावो, नहीं तां अपना आप दिखा देसन।

खबरदार हो जाओ मेरे भाईयो, बली आप तुहानुं समझा देसन।।

मन लवो मेरे भाईयो, उपदेश बली कोलों लै जाओ।

राम लक्ष्मण सीता प्यारी नूं बली जी आप मिला देसन।।

जिन्हां नाम लिया होया है, बली युक्ती आप बता देसन।

जेहड़े भाई नूं चाह है रघुनाथ जी दी, बली जी आप मिला देसन।

सुत्ते हो तां हुण जागो भाईयो, बली रघुनाथ जी दे चरणां विच बहला देसन।

तीनों ताप देख के बली दुनियां दे विच आ गये।

दुखड़े सब दे दूर होसन, त्रिलोकी नूं बली जी हर्षा देसन।।

गाफ़ल सुत्तियां भाईयां नूं, बली जी आप जगा देसन।

रघुवीर महाबीर जी फिर रहे ने, हुण इको रूप दिखा देसन।

वक्त है हुण सम्भल जावो, अखीरी वक्त हुण आ गया।

शरण आवो महाबीर जी दी, ओ दीन पर दयाल होसन।।

दासी हुण ए पुकार रही शरणीं आवो महाबीर जी दी।

जेहड़े भाई बिगड़े होए ने, उन्हां नूं बली समझा देसन।।

सजनों अभी जो भजन आपने सुना है उसका एक-एक शब्द अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसके अन्तर्गत कुमार्ग पर चलने वाले कलुकालवासियों को चेतावनी देकर सद्मार्ग पर आने का आवाहन दिया गया है। सो इस आवाहन को समझना है क्योंकि परोपकार प्रवृत्ति श्री साजन जी कुल दुनियां की भलाई के निमित्त बार-बार सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में जीवन का उचित मार्ग बता रहे हैं और साथ ही यह समझा रहे हैं कि क्योंकर आज का मानव जीवन के उचित मार्ग से भटककर नकारात्मक स्वाभाविक अवस्था को प्राप्त हो चुका है और नाना प्रकार की परेशानियों व ताप-संतापो से घिरकर घोर दुःख भोग रहा है। इन्सान की ऐसी हालत को समझते हुए सच्चेपातशाह जी स्पष्ट शब्दों में कहते हैं कि सम्भल जाओ अन्यथा सजन श्री शहनशाह हनुमान जी कुल ब्रह्माण्ड को अपना बल दिखा देंगे। इस सन्दर्भ में अगर हम समय की कद्र करते हुए सच्चेपातशाह जी के वचनों की सुनिश्चित रूप से पालना करने का संकल्प लेते हैं तो जानो कि हमारा जीवन सुख व आनन्द से भर सकता है। इसी के साथ हम अपने जीवन उद्देश्य की भी इसी जीवन में पूर्ति कर अपने सच्चे घर परमधाम पहुँच विश्राम को पा सकते हैं। जानो यह एक सुनहरी मौका है अतः इस मौके को किसी विध् भी खोने की भूल मत करना अन्यथा यह भूल आत्मघाती साबित होगी। इस विषय में हम तो यही कहेंगे कि मानव रूप में ईश्वर ने जो आपको अपना अच्छा-बुरा समझने की विवेकशक्ति दी है उसका इस्तेमाल करो और अपना जीवन, सजनता का प्रतीक बना लो। इसी के साथ आप सजनों को चैत्र के यज्ञ के लिए कीर्तन दिये हैं उनकी अच्छे से तैयारी करो ताकि आपकी प्रस्तुति भाव-भंगिमा पूर्ण अच्छे तरीके से हो। ठीक है जी?

'हाँ जी'।

अब सजनों जैसा कहा भी गया हैः-

समय तो समय है, चलता है रहता

हर शै का रंग-रूप बदलता है रहता

सुनो ध्यान देकर, समय क्या है कहता

मेरे संग चले जो आनन्द में है रहता

इस सन्दर्भ में सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हर मानव को जिस सतयुग में प्रवेश करने के लिए आवाहन दे रहा है, उस कार्य की सिद्धि हेतु हर मानव के लिए समय रहते ही भाव-स्वभाव परिवर्तन अनिवार्य है। याद रखो जो उस युग की आचार-संहिता अनुसार अपना स्वाभाविक रूप नहीं ढालेगा, वह दुष्चरित्र मानव दग्ध-भस्म अवस्था को प्राप्त होगा। इस सन्दर्भ में जो इस कलियुग में दग्ध-भस्म अवस्था को प्राप्त होगा, उसका पुनर्जन्म फिर कलियुग में ही होगा। सो अनगिनत समय तक इस अवस्था में पड़े रहना अत्यन्त दुःखदायी होता है। किसी भी जीव के साथ ऐसा न हो उसके लिए अभी से सचेत हो जाओ और घर सतयुग बनाने में विलम्ब न करो। तभी माना जाएगा कि आप अपने व अपनों के सजन हो। यहाँ याद रखो कि अपने साथ वैर कमाना, अपने बच्चों, सगे-सम्बन्धियों या जो भी मित्रजन हों उनके साथ वैर कमाना व उन्हें ग़ुमराह होते हुए देखते रहना - यह बहुत बड़ा पाप है। फिर ऐसा पाप यदि माता-पिता द्वारा हो तो यह यम की कड़ी त्रास भुगतने की बात है। ऐसा न हो इस हेतु सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की नीतियों का सहर्ष पालन करना सुनिश्चित करो। किसी इन्सान के पीछे नहीं दौड़ो अपितु स्वतन्त्र रूप से अपना जीवन निर्विकारिता से आगे बढ़ाओ। आपके पास आत्मिकज्ञान है। घर में वस्तु होते हुए भी अपने आप को उस सम्पदा से वंचित रखना, यह तो दुर्भाग्य को प्राप्त होने की बात होती है। इस दुर्भाग्य से बचने हेतु सतवस्तु के वचनों को अपनाओ और मन-वचन-कर्म में उतार दो। यही है जन्म की बाज़ी जीतने का तरीका। सो मिलकर बोलोः-

जीतेंगे, जीतेंगे हम जन्म की बाज़ी जीतेंगे

हनुमान जी दे वचनां ते चल चले हम हम जन्म की बाज़ी जीतेंगे

जीतेंगे, जीतेंगे हम जन्म की बाज़ी जीतेंगे

इसी के साथ सजनों जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है कि जो इस द्वारे की नीतियाँ हैं, उनको हर सजन ने अच्छे से समझना है क्योंकि इस द्वारे पर जो क्रियाएँ चलती हैं, वे उन नीतियों के अन्तर्गत ही आती हैं। इसीलिए बार-बार कहा जाता है कि पति-पत्नी या बच्चे एकमतता से जीवन व्यतीत करते हुए एक ही रास्ते पर बने रहो ताकि आपकी एकता मज़बूत रहे। इस हेतु आप स्वीकारोगे कि नाम लेकर 'गाना' धारण करना आवश्यक है। फिर कई नीति-नियम भी ऐसे हैं जो इस धारणा के बगैर नहीं हो सकते। इस सन्दर्भ में अब आप सबने देखना है कि पति-पत्नी दोनों एक रास्ते पर चलें। दोनों ने नाम लिया हुआ हो व आपके शादी-शुदा बच्चे भी नामी हों। अगर ऐसा नहीं है तो उन्हें नाम लेने के लिए प्रेरित करो और इस तरह उनके सजन बन जाओ ताकि वे जीवन के सद्‌मार्ग पर बढ़ते हुए अपनी वास्तविकता से परिचित हो जाएँ और जीवन उद्धार करने में सक्षम हो जाएँ। आशय यह है कि अपने बच्चों को बेशक भौतिकता के नीति-नियम सिखाओ पर साथ ही आध्यात्मिक नीति-नियमों से भी परिचित कराओ। जानो यही आपका परम कर्त्तव्य है। इस कर्त्तव्य को निभाने में जो भी माता-पिता कमज़ोर पड़ते हैं, उनके जीवन में कहीं न कहीं कठिनाई अवश्य खड़ी हो जाती है क्योंकि परिवार के हर एक सदस्य का स्वाभाविक रूप भिन्न-भिन्न हो जाता है। उस भिन्नता के कारण अजीबो-अजीब परिस्थितियाँ बन जाती हैं। इन परिस्थितियों में उलझकर माता-पिता व बच्चे सत्य-धर्म के रास्ते पर चलने में असक्षम हो जाते हैं क्योंकि सब के सब फुरनों में जकड़े होते हैं। आध्यात्मिकता से उनका लगाव नहीं होता। सजनों यही कलियुग की निशानी है जिसका नतीजा हार है। इसीलिए तो सच्चेपातशाह जी बार-बार सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के माध्यम से हर इन्सान को

सपरिवार आत्मज्ञान प्राप्त करने का आवाहन दे रहे हैं। इस आत्मज्ञान के अभाव में इन्सान भौतिकज्ञान होते हुए भी परिपूर्ण नहीं बन सकता। इसी कारण वह जीवन में कहीं न कहीं किसी क्षेत्र में अवश्य कमज़ोर पड़ जाता है। आप ही बताओ कि यदि हम अपनी वास्तविकता को ही नहीं पहचान पाते तो हम सब कुछ करने में कैसे सक्षम हो सकते हैं और अपने जीवन लक्ष्य को कैसे पा सकते हैं? इस तरह जीवन गड़बड़ा जाता है। इस सन्दर्भ में सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ भी कह रहा है कि श्री रामचन्द्र जी भी जब परमार्थ की नीतियों अनुसार विचरे तो ही नीति-पुरुषोत्तम कहलाए। सो हमें इस तथ्य से सीख लेनी है और समझदार बनना है। इस हेतु सबने अपनी-अपनी भूल को सुधारना है और चैत्र के यज्ञ पर अपना यह अधूरा रहा हुआ काम पूरा कर लेना है।

आप ऐसा करने में कामयाब हों, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।